

Chapter-5

शुकनासोपदेशः

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम् -

- (क) लक्ष्मीमदः कीदृशः ?
- (ख) चन्द्रापीडं कः उपदिशति ?
- (ग) अनर्थपरम्परायाः किं कारणम् ?
- (घ) कीदृशे मनसि उपदेशगुणाः प्रविशन्ति ?
- (ङ) लब्धापि दुःखेन का परिपाल्यते ?
- (च) केषाम् उपदेष्टारः विरलाः सन्ति ?
- (छ) लक्ष्म्या परिगृहीताः राजानः कीदृशाः भवन्ति ?
- (ज) वृद्धोपदेशं ते राजानः किमिति पश्यन्ति ?

उत्तरम् :

- (क) लक्ष्मीमदः अपरिणामोपशमः दारुणः अस्ति।
- (ख) चन्द्रापीडं मन्त्री शुकनासः उपदिशति।
- (ग) अनर्थपरम्परायाः कारणानि-गर्भेश्वरत्वम्, अभिनवयौवनत्वम्, अप्रतिम-रूपत्वम्, अमानुषशक्तित्वं चेति।
- (घ) अपगतमले मनसि उपदेशगुणाः प्रविशन्ति।
- (ङ) लब्धापि दुःखेन लक्ष्मीः परिपाल्यते।
- (च) राज्ञाम् उपदेष्टारः विरलाः सन्ति।
- (छ) लक्ष्म्या परिगृहीताः राजानः विक्लवाः भवन्ति।
- (ज) वृद्धोपदेशं ते राजानः जरावैक्लव्यप्रलपितम् इति पश्यन्ति।

प्रश्न 2. विशेषणानि विशेष्यैः सह योजयत -

विशेषणम् - विशेष्यम्

(क) समतिक्रामत्सु -

- (ख) अधीतशास्त्रस्य - विद्वांसम्
 (ग) दारुणो
 दिवसेषु
 (घ) गहनं तमः - दोषजातम्
 (ङ) अतिमलिनम् - लक्ष्मीमदः
 (च) सचेतसम् - यौवनप्रभवम्

उत्तरम् :

- (क) समतिक्रामत्सु - दिवसेषु
 (ख) अधीतशास्त्रस्य -
 (ग) दारुणो - लक्ष्मीमदः
 (घ) गहनं तमः - यौवनप्रभवम्
 (ङ) अतिमलिनम् - दोषजातम्
 (च) सचेतसम् - विद्वांसम्

प्रश्न 3. अधोलिखितपदानि स्वरचित-संस्कृत-वाक्येषु प्रयुग्ध्वम् -
 संग्रहार्थम्, समुपस्थितम्, विनयम्, परिणमयति, शृण्वन्ति, स्पृशति।

उत्तरम् :

- (क) संग्रहार्थम्-सद्गुणानां संग्रहणार्थं सदा यत्नः करणीयः।
 (ख) समुपस्थितम्-राजा समुपस्थितं सेवकं शस्त्रम् आनेतुम् आदिशत्।
 (ग) विनयम्-विद्या विनयं ददाति।
 (घ) परिणमयति-लक्ष्मीमदः सज्जनम् अपि दुष्टभावेषु परिणमयति।
 (ङ) शृण्वन्ति-अहंकारिणः राजानः गुरूपदेशान् न शृण्वन्ति।
 (च) स्पृशति-लक्ष्मीः गुणवन्तं न स्पृशति।

प्रश्न 4. अधोलिखितानां पदानां सन्धिच्छेदं कुरुत –

उत्तरसहितम् :

- (क) एवातिगहनम् = एव + अतिगहनम्
 (ख) गर्भेश्वरत्वम् = गर्भ + ईश्वरत्वम्
 (ग) गुरूपदेशः = + उपदेशः
 (घ) येवम् = हि + एवम्
 (ङ) नाभिजनम् = न + अभिजनम्
 (च) नोपसर्पति = + उपसर्पति

प्रश्न 5. प्रकृति-प्रत्ययविभागः क्रियताम् –

उत्तरसहितम् :

	प्रकृतिः	प्रत्ययः
(क) चिकीर्षुः	√कृ	सन् + उ
(ख) उपदेष्टव्यम्	उप + √दिश्	तव्यत्
(ग) ईक्षते	√ईक्ष्	त
(घ) बुध्यते	√बुध् (कर्मवाच्ये)	त
(ङ) निन्दसे	√निन्द् (कर्मवाच्ये)	थास् > से
(च) उपशशाम	उप + √शम्	त > णल्

प्रश्न 6.

समासविग्रहं कुरुत -

उत्तरसहितम् :

- (क) अमानुषशक्तित्वम् - न मानुषशक्तित्वम् (नञ्-तत्पुरुषः)
 (ख) अत्यासगः - अतिशयेन आसङ्गः (उपपद-तत्पुरुषः)
 (ग) अनार्या - न आर्या (नञ्-तत्पुरुषः)
 (घ) स्वार्थनिष्पादनपरैः . स्वार्थस्य निष्पादने परैः (तत्परैः) तत्पुरुषः
 (ङ) अहर्निशम् - निशायां निशायाम् (अव्ययीभावः)
 (च) वृद्धोपदेशम् - वृद्धानाम् उपदेशम् (षष्ठी-तत्पुरुषः)

प्रश्न 7. रिक्तस्थानानि पूरयत -

- (क) लक्ष्मीः न रक्षति।
 (ख) दुःस्वप्नमिव न स्मरति।
 (ग) सरस्व तापारगृहात ।
 (घ) उपदिश्यमानमपि न शृण्वन्ति।
 (ङ) अवधीरयन्तः हितोपदेशदायिनो गुरून्।
 (च) तथा प्रयतेथाः नोपहस्यसे जनैः।
 (छ) चन्द्रापीडः प्रीतहृदयो आजगाम।

उत्तरम् :

- (क) परिचयम्
 (ख) दातारम्
 (ग) नालिङ्गति
 (घ) राजानः
 (ङ) खेदयन्ति
 (च) यथा
 (छ) स्वभवनम्।

प्रश्न 8. सप्रसंगं हिन्दीभाषया व्याख्या कार्या -

(क) गर्भेश्वरत्वभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा।

(ख) हरति अतिमलिनमपि दोषजातं गुरूपदेशः।

(ग) विद्वांसमपि सचेतसमपि, महासत्त्वमपि, अभिजातमपि, धीरमपि, प्रयत्नवन्तमपि पुरुष दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति।

उत्तरम् :

(क) गर्भेश्वरत्वभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा।

व्याख्या-प्रस्तुत पंक्ति शुकनासोपदेश नामक पाठ से ली गई है। यह पाठ संस्कृत के महान् गद्यकार बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्ति में मन्त्री शुकनास युवराज चन्द्रापीड को उपदेश करते हुए अनर्थ के चार कारणों की ओर ध्यान दिला रहे हैं।

मन्त्री शुकनास कहते हैं कि अनर्थ की परम्परा के चार कारण हैं -

- (i) जन्म से ही प्रभुता
- (ii) नया यौवन
- (iii) अति सुन्दर रूप
- (iv) अमानुषी शक्ति।

इन चारों में से मनुष्य का विनाश करने के लिए कोई एक कारण भी पर्याप्त होता है। जिसके जीवन में ये चारों ही कारण उपस्थित हों, उसके विनाश को कौन रोक सकता है ? इसीलिए प्रत्येक मनुष्य को घोर अनर्थ से बचने के लिए उक्त चारों वस्तुएँ पाकर भी कभी अहंकार नहीं करना चाहिए।

(ख) हरति अतिमलिनमपि दोषजातं गुरूपदेशः।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्ति शुकनासोपदेश नामक पाठ से ली गई है। यह पाठ संस्कृत के महान् गद्यकार बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्ति में शुकनास युवराज चन्द्रापीड को गुरु के उपदेश का महत्त्व समझा रहे हैं। मन्त्री शुकनास कहते हैं कि गुरु का उपदेश मनुष्य के जीवन में बहुत अधिक उपयोगी तथा हितकारी होता है। मनुष्य में यदि अत्यधिक गहरे

दोषों का समूह हो तो गुरु का उपदेश उन गहरे से गहरे दोषों को भी दूर कर देता है और उन दोषों के स्थान पर अति उत्तम गुण प्रवेश कर जाते हैं। मनुष्य का जीवन उज्ज्वल हो जाता है। सब जगह ऐसे व्यक्ति का यश फैलता है, इसीलिए गुरु का उपदेश प्रत्येक मनुष्य के लिए परम कल्याणकारी तथा आवश्यक है।

(ग) विद्वांसमपि सचेतसमपि, महासत्त्वमपि, अभिजातमपि, धीरमपि, प्रयत्न-वन्तमपि पुरुषं दुविनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्ति शुकनासोपदेश नामक पाठ से ली गई है। यह पाठ संस्कृत के महान् गद्यकार बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्ति में मन्त्री शुकनास लक्ष्मी अर्थात् धन के गुणों पर प्रकाश डाल रहे हैं। मन्त्री शुकनास कहते हैं कि लक्ष्मी इतनी शक्तिशाली होती है कि अत्यन्त जागरूक रहने वाले विद्वान्, महान् बलशाली, उच्चकुल में उत्पन्न, धैर्यशील तथा अत्यन्त परिश्रमी मनुष्य को भी यह लक्ष्मी दुष्ट आचरण वाला बना देती है। शुकनास के कहने का तात्पर्य है कि जिस मनुष्य के पास धन होता है, वह धन के अहंकार में कर्तव्य-अकर्तव्य के विवेक को खो बैठता है और कुमार्गगामी हो जाता है।